मो चरसरमाञ्जनक्रमीकस्रोतौरञ्जनपद्मकेसर-योजनवल्ल्यो दीर्घम्सला चेति॥")

रीर्घम्ली, स्ती, (दीर्घ मलमस्या: । डीप् ।) दुरा-लभा। इति प्रव्दमाला॥

दीर्घरदः, पं, (दीर्घा रदी दन्ती यखा।) शुकरः। इति जिकाराष्ट्रीय: ॥ व्यायतदन्ते, जि ॥

दीर्घरमनः, पुं, (दीर्घा रमना जिज्ञा यस्य।) सप:। इति ग्रब्दचन्द्रिका॥

दीघरागा, स्ती, (दीर्घ: अधिनकालस्थायी रागी दीर्घिशस्वक:, पुं, (दीर्घा शिक्यिंस्य। नप्।) यसा:।) इरिद्रा। इति राजनिर्घेग्ट:॥

दीर्घरानं, क्षी, (दीर्घा: प्रचुरा राचय: सन्यच। अग्रे चादिलात अच।) चिर्कालम्। इति विकाखप्रेष:॥ (पं. दीघां चासौ राविखेति वियहे।"सर्वेनदेश्सद्धातपुण्यवर्षादीर्घादाचे:।" इति सुम्बवीधस्त्रचात् यः। पुंख्वमभिधानात् 1) दीर्घा निशा च 1

दीर्घरोमा,[न्]पं, (दीर्घाण रोमाण यस।)भन्नतः। इति प्रव्हार्धनत्येतरः ॥ (महादेवस्य भूताना-मन्यतमः। यथा, इरिवंग्रे भविष्यपर्वशा ।१ हार। "तस्याये समपदान्त भूतसङ्घाः सहस्रग्रः।"

"दीर्घरोमा दीर्घभुजो दीर्घवाह्य निरञ्जनः ॥") दीर्घरोचिषकं, क्री, (दीर्घं रोचिषम्। ततः खार्थे संज्ञायां वा कन्।) कत्त्राभेदः। सुगन्धित्रण-विशेष:। वड़ रोहिष इति भाषा। ततुपर्याय:। हण्का छम् २ इए चहरम् ३ यक्ते छम् ४ दीर्घ-नालम् ५ तिल्लासरम् ६। अस्य गुणाः। तिल्ल-लम्। कटुलम्। उषालम्। कषवातस्तग्रह-विवनाप्रित्वम्। त्रयाच्तविरोपयात्वच् । इति

दीर्घवंग:, पुं, (दीर्घी वंग्र इव।) नल:। इति राजनिर्धेग्ट: ॥ स्रायते हणध्वने कुले च ॥ दीर्घवक्र:, पुं, स्त्री, (दीर्घ वक्रं मुखं यस्य ।) इस्ती। इति ग्रब्दमाला॥ (लम्बवदने, चि॥)

दीर्घविच्हिता, स्त्री, कुम्भीर:। इति प्रब्दार्घकत्व-

दीर्घवली, स्ती, (दोर्घा वली।) महेन्द्रवारुणी। पातालगरुड़ी। पलाभी। इति राजनिर्धेग्टः॥ चायता लता च ॥

दीवहनः, पुं, (दीघं हनां यखा) ख्रांगाक-वृत्तः । इत्यमरः ।२। ४। ५०॥ (अस्य पर्यायो यथा, वैद्यकरत्रमालायाम्।

"म्बोगाको भूतपुष्यस पूतिवृत्ती सुनिहुम:। रीवरन्तस कद्वा भल्तक्य्यदकीरक्याः॥")

दीघरुन्तफ:, पुं, (दीघरन्त + खार्थ कन्।) प्योणाकः। इति ग्रन्दमाला ॥ प्योणाकप्रभेदः। इति राजनिर्घण्टः॥ (ग्योनाक्याच्देशस्य विवर्णं ज्ञातयम्॥)

दीर्घष्टमा, स्त्री, (दीर्घ वन्तं यस्या:।) इन्द्र-चिभिंटी। इति रा निर्धिग्दः॥

दीर्घटन्तिका, स्त्री, (दीर्घ वन्तं यस्याः। कप। टापि चात इसम्।) एलापणी। इति प्रब्द-विन्तिका ॥

दीर्घ प्रर:, पुं, (दीर्घ: प्रर:।) यावनाल:। इति राजनिर्घगटः॥

दीर्घपाखः, पुं, (दीर्घा प्राखा यखा) प्रणवृत्तः। इति राजनिर्धेग्दः ॥ ग्रालकृतः । इति ग्रब्द-

दीर्पशाबिका, स्त्री, (दीर्घा शाखा यस्या:। कापि अत इलम्।) नीलाम्बीचुप:। इति राज-निर्घेगटः ॥

चवः। इति राजनिर्घेग्टः॥

दीर्घम्युककं, क्ली, (दीर्घ म्यूकं यस्य । कप ।) राजा-

त्रम्। इति राजनिर्वेग्टः॥ दीर्घमकर्थ, जि. (दीर्घ सकथिनी यस्त । "बहु-ब्रीही सक्ष्यन्ता: खाङ्गात् वच्।" ५ । १। ११३। इति षच ।) दीघोंर । इति वाकरणम् ॥ दीर्घमक्षि, क्री, (दीर्घ मक्षिनी बखा। खाङ्गादि-वालीरन न यच।) भकटम्। इति याकरणम्॥ दीर्घसर्चं, क्री, (दीर्घं वह्नतालसाध्यं सचम्।) यज्ञविश्वेष:। (यथा, भागवते। १। १। २१। "कलिमागतमाद्भाय चेचेरिसान् वैषावे वयम्। चासीना दीर्घसचेश कथायां सच्चा हरे: "") तीर्थविश्रेष:। इति भ्रव्हार्थकत्वत्वतः॥ (यथा. महाभारते। ३। ८२। १०३-१०8। "ततो गच्छेत राजेन्द्र। दीर्घमचं यथाक्रसम्। तच ब्रह्माद्यो देवा: सिद्वाच परमर्थय:। दीवसनमुपासन्ते दीचिता नियमवता: ॥ गमनादेव राजेन्द्र । दीर्घसचमरिन्दम ।। राजद्याश्वमेधाश्यां फलं प्राप्नीति मानवः॥") दीर्घसरतः, पुं, (दीर्घ बहुकालवापकं सुरतं मेथ्नं यस।) कुक्तरः। इति चिकाराष्ट्रीयः॥ दीघसनः, नि, (दीर्घेण बहुकालेन सर्च कार्या-रस्भी यस्य।) चिरक्रिय:। इत्यमर: ।३।१।१०॥ "यदीर्घस्त्रस भवेत् सर्वकर्मस पार्थिवः। दीर्घस्यच्छ रूपतेः कमीद्वानिष्ठ्वं भवेत्॥

चप्रिये चैव कर्त्रचे दीर्घसत्रच प्रखते॥" इति मत्खपुराणम् ॥

(बायततन्तुतम्। यथा, माघे। १०। ६१। "मेखलागुणविलयमस्यां दीर्घसनमकरोत् परिधानम् ॥")

रागे देवे च कामे च दोहे पापे च कमि खा।

विस्तृते तन्ती, स्ती ॥ दीर्घसनी, [न] नि, (दीर्घसनं बहुकालं वापा कर्मारमोश्स्यस्थित। दीर्घस्च + इति:।) दीघंसन: । इति इलायुध: ॥ (यथा, गीता-याम्।१८।२८।

"विषादी दीर्घस्त्री च कर्ता तामस उचते ॥") दीर्घस्तन्य:, पुं, (दीर्घ: खन्यो यखा) तालव्य:। इति राजनिर्घग्टः ॥

दीर्घा, स्त्री, (दीर्घ + टाप्।) एत्रिपगौं। इति राजनिर्धेष्टः ॥ (अस्याः पर्याया यथा,---"प्राप्तियों एथकपणीं लाझूली क्रीयपुच्छिका। धार्मानः कलग्री तन्त्री गृहा क्रीएकमेखला॥

दीर्वा खगालविता सा श्रीपणी सिं इपुष्किका। दीर्घपना वितिलुचा प्रतिला चिनपर्थिका ॥" इति वैद्यकरतमालायाम् ॥)

दोर्घाध्वगः, त्रि, (दोर्घमध्वानं गच्छतीत । गम+ ड:।) वेखहार:। घाउड़िया इति भाषा। उष्, पुं। इति मेदिनी ॥ गे, ५० ॥

दीर्घायुः, [स्] पुं, (दीर्घं चायुर्यस्य ।) प्रात्मिल-वृत्तः। जीवकवृत्तः। मार्केख्यः। चिरजीविनि, चि। इति मेदिनी। से, पूप् ॥ (यथा, महाभारते। ७। ५०। १८।

"दीर्घायुष: प्रचा: सर्वा युवा न व्यिते तदा॥") "तत्र महापाणि-पाद-पार्श्वपृष्ठकानायद्श्यन-वदनस्तत्वलाटं दीर्घाङ्गलिपळीच्छासप्रैचण-वाहं विस्तीर्थभूस्तनान्तरोष्ट्रं इसजङ्घामेष्ट्रगीदं गसीरसलखरनाभिमनुचैवेहस्तनस्पचितमहा-रोमप्रकर्ण पश्चान्त्रस्तिष्कं सातानुलिप्तं महानु-पूर्व्या विश्वसाणप्रशरं पचाच विश्वसाण-इदयं पुरुषं जानीयादीर्घायुः खब्बयमिति।" "गृष्यिसिरास्त्रायुः संभ्ताङ्गः स्थिरेन्द्रियः। उत्तरीत्तरसुचेत्रो यः स दीर्घायुरुचते ॥ गर्भात् प्रस्त्यरोगो यः भ्रनेः समुपचीयते। प्ररोरज्ञानविज्ञानै: स दीर्घायु: समासत: ॥"

इति सुत्रुते स्वस्थाने ३५ वधाये॥) दीर्घायुधः, युं, (दीर्घ च्यायुधः।) कुन्तास्त्रम्। इति चिकार प्रेष: ॥ (दीची आयुधी इव दन्ती यखा) श्रुकर:। इति भ्रब्दमाला।

दीर्घायुष्य:, पुं, (दीर्घ चायुष्यं जीवनं यस्य।) म्बेतमन्दारकः। इति राजनिर्घग्टः॥

दीर्घालकी:, पुं, (दीर्घ चलकी इव।) खेतमन्दा-रकः। इति राजनिर्धेग्टः॥

दीर्घिका, खी, (दीर्घेव। दीर्घा + संज्ञारां कन्। टापि खत इलम्।) विभातधनु:परिभित्रजला-भ्यः। दीचि इति भाषा। तत्पर्यायः। वत्पी, २। इत्यमरः ।१।१०।२८॥ (यथा, रघुः । १६ । १३ । "वनैरिदानीं मिच्चिस्तदमाः

म्हजाइतं क्रोग्रति दीर्घिकाणाम् ॥") तच्चलगुगाः। गुरुलम्। कटुलम्। चारलम्।

पित्तलत्वम्। कपावातनाप्रित्वच। इङ्गपत्री। इति राजनिर्घेग्टः ॥

दीर्घे वार:, यं, (दीर्घा इवार:।) डक्करी। इति राजनिर्घेत्दः ॥

दीर्थः, चि, (दृ विदारे + तः।) विदारितः। (यथा, गो: रामायगा । २। ३६। २६। "आयसं च्हदयं नृनं राममातुः सुसंहतम्। यत दीखें प्रिये पुन्ने वनवासाय निर्मते ॥") भीत:। इति मेदिनी । यो, १६ ॥ (यथा, मचा-भारते। ६। ३। ०६। "एको दीर्गो दारयति सेनां समहतीमपि।

तां दीर्णामन दीर्यन्ते योघा: श्रतरा चाप ॥") दीवि:, पुं, किकीदिवि:। इति ग्रब्दमाला ॥ दु, गती । इति कविकल्पह्मः ॥ (भ्वां-परं-सर्वं-चानिट्।) दवति। इति दुर्गादासः॥